उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्रओं के जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन करना

नेहा शर्मा[1]*, डॉ. सविता गुप्ता[2]

[1] शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

[2] शोध पर्यवेक्षक, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

सार - भारत विविधता में एकता रखने वाला देश है जहां पर अलग-अलग जाति के समाज पाए जाते हैं जैसे जलवायु के आधार पर जनसंख्या के आधार पर भौगोलिक बनावट के आधार पर प्रजाति इतिहास राजनीति भाषा व सामाजिक व्यवस्था आदि विभिन्न दाएं पाई जाती है। इसका क्षेत्रफल काफी फैला हुआ है जनसंख्या की दृष्टि से भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का क्षेत्रफल सातवें स्थान पर है। प्राचीन काल से ही भारत भारत के लोगों के द्वारा ज्ञान का संग्रहण किया जाता रहा है पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में लोगों को वही संस्कार दिए जाते हैं जो उनके परंपरागत होते हैं तथा वह कुछ स्वयं के द्वारा अर्जित भी करते हैं । संस्कारों की इसी श्रंखला को शिक्षा के नाम से जाना जाता है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी मानसिक आध्यात्मिक सामाजिक राजनीतिक प्रगति करता है शिक्षा ने मानव को सभी प्रकार के जीवो में श्रेष्ठ बनाया है और संपूर्ण बनाया है शिक्षा के अभाव में मानव एक पशु तुल्य माना जाता है अतः शिक्षा ज्ञान और विज्ञान दोनों का अभाव होगा तो मनुष्य एक जानवर के समान प्रतीत होगा। आदि काल में समाजों में अनौपचारिक रूप से शिक्षा प्रदान की जाती थी जैसे परिवार के द्वारा क्रीडा समूह के द्वारा व्यवसाय और जातिगत समूह के द्वारा इत्यादि परंतु वर्तमान युग में शिक्षा शिक्षण संस्थाओं के द्वारा जैसे विश्वविद्यालय स्कूल कॉलेज आदि के द्वारा औपचारिक रूप से शिक्षा प्रदान की जाती है।

कुर्जी शब्द - प्रस्तावना, उद्वेश्य, तकनीकी शब्द, अध्ययन की विधि, जनसंख्या, न्यादर्श, उपकरण, साख्यिकी, परिकल्पना।

----------X----------

प्रस्तावना

जीवन कौशल अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार है जो कि सभी व्यक्तियों में किशोरों को भी शामिल किया गया है अपनी शक्तियों और कमियों व उपलब्धि के स्तर के प्रति जागरूक होना अत्यंत आवश्यक है। सभी किशोरों को अपनी समस्याओं को पहचानने उन समस्याओं का वैकल्पिक समाधान ढूंढने और उचित चुनाव करने हेतु कौशल की आवश्यकता होती है उन्हें अपने परिवार के सदस्य व मित्रों के साथ व्यवहार करने के लिए संपूर्ण दक्षता और मुख्य भावनाओं को प्रभावपूर्ण तरीके से व्यक्त करने के लिए कौशल की आवश्यकता होती है जिससे पिछले कुछ दशकों में अनुभव किया गया कि शिक्षा व्यवस्था के लिए एक विशेष चुनौती प्रतीत हो रही है जिस रूप में शिक्षा दी जा रही है वह भावी जीवन को तैयार करने के लिए पर्याप्त नहीं मानी जा रही है जैसे एक तरफ तो शिक्षा जरूरत बन गई है दूसरी तरफ शिक्षा के साथ बेरोजगारी भी बढ़ती जा रही है अतः यह आवश्यक माना जाता है कि शिक्षा के द्वारा इस प्रकार के कौशलों की विकास किया जाए जिससे व्यक्ति का संपूर्ण विकास किया जा सके मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व मनोदैहिक व्यवस्थाओं को एक गत्यात्मक संगठन के रूप में माना है।

यह मनोदैहिक व्यवस्थाएं ऐसी व्यवस्थाएं हैं जिसके द्वारा मनुष्य एक दूसरे से संपर्क स्थापित करता है और अपने जीवन में उदय होने वाले व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करता है जैसे आत्म चेतना , गत्यात्मक ता समन्वय शारीरिक संरचना सामाजिकता समायोजन

इच्छाशक्ति मानसिक स्वास्थ्य सकारात्मक नजरिया और प्रभावशीलता अतः समाज के अंतर्गत सभी लोग ऐसा चाहते हैं कि इस प्रकार की शिक्षा लागू की जाए जिससे एक किशोर में आत्मविश्वास और सकारात्मक व आशावादी अभिवृत्ति का विकास हो सके।

प्राय विद्यार्थियों के जीवन में किशोरावस्था का विशेष महत्व होता है जिसको हम निम्न परिभाषा के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं कि किशोरावस्था आवेग , तूफान , चिंतन की अवस्था होती है जिससे इसकी नर के द्वारा दी गई है इसका प्रमुख कारण किशोरों की मानसिकता स्थिति नहीं होने से उनके स्वभाव में बार-बार बदलाव देखा जाता है जैसे इस बार दा असंतोष उपेक्षा शारीरिक मानसिक तनाव वह भावनात्मक परिवर्तन जैसी समस्याएं बार-बार देखी जा सकती है किशोर अपने सपनों के संसार में खोए हुए रहते हैं वह अपने आप को भीड़ से अलग रखना चाहते हैं इस कारण अपनी भावनाओं को पूर्ण रूप से किसी के सामने व्यक्त नहीं कर पाते हैं कई बार उन्हें लगता है कि अगर वह अपनी भावनाएं व्यक्त कर देंगे तो उन्हें किसी ना किसी के सम्मुख अपमानित होना पड़ेगा अतः अपने अधिकारों से वंचित होने पर उनकी उनकी योजनाओं के क्रियान्वयन नहीं होने पर उनमें क्रोध उत्पन्न होना शुरू हो जाता है। अजय जीवन को अधिक कुशलता पूर्वक जीने के लिए कौशल को होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कौशल के द्वारा हम अपने जीवन को सुख शांति और समृद्धि से जीवन यापन कर सकते हैं जीवन कौशल को विकसित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन शिक्षा को ही माना गया है जीवन कौशल वह है जो व्यक्ति को समाज में उपयोगी राष्ट्र उपयोगी व संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बना सकें जीवन कौशल से तात्पर्य व्यक्तित्व के चहुमुखी विकास के साथ घर परिवार समाज राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय से अनुकूल व अपनत्व का एहसास करना है तथा अर्जित ज्ञान को व्यवहारिक रूप प्रदान करना और जीवन के संघर्षों को समझना वह उन्हें उन्हें समाधान करना ही जीवन कौशल है जीवन की अपनी परेशानियों से घबराकर कायरों की तरह पलायन करना जीवन कौशल के रूप में नहीं जाना जा सकता है।

शिक्षा का प्रमुख कार्य सभी प्रकार के छात्र-छात्राओं में व्यवसायिक शिक्षा व्यक्तिगत शिक्षा और भावात्मक शिक्षा का पूर्ण रूप से विकास करना है शिक्षा मार्गदर्शन के रूप में प्रमुख कार्य करती है यह कार्यों पर तथा तथ्यों पर आधारित होती है मार्गदर्शन और परामर्श सेवाएं छात्रों को अपने फैसले और उनके विकल्पों के परिणामों की जिम्मेदारी को बेहतर ढंग से निभाने के लिए तैयार करती है ऐसे बुद्धिमानी विकल्पों को बनाने की क्षमता केवल प्राकृतिक नहीं बल्कि कौशल्य क्षमता के द्वारा ही संभव हो सकती है अतः प्रभावी मार्गदर्शन कार्यक्रम छात्र की जरूरतों पर आधारित है कुछ आवश्यकताओं को किशोरों की उम्र के आधार पर विशिष्ट बनाई जा सकती हैं अतः अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित और नियंत्रित अध्ययन है जिसके द्वारा सभी प्रकार के चारों घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण और अन्वेषण किया जा सकता है जिसके अंतर्गत सांख्यिकी और वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाता है अतः प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षों और नियमों व सिद्धांतों की रचना आदि की पुष्टि की जाती है तथा शुद्ध और व्यवस्थित ज्ञान को प्राय वैज्ञानिक ज्ञान की संज्ञा दी जाती है प्रतीक अनुसंधान के द्वारा उच्च श्रेणी का वैज्ञानिक ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है वैज्ञानिक ज्ञान का आधार वैज्ञानिक अनुसंधान नहीं हो सकता है और प्रत्येक अनुसंधान एक उच्च कोटि का होना आवश्यक है परंतु प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान उच्च कोटि का नहीं हो सकता है वास्तव में वैज्ञानिक ज्ञान विकास के साथ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और मानव सभ्यता को प्रगतिशील बनाने में सहायता करता है अतः यह स्पष्ट है कि अनुसंधान का स्वरूप सदैव वैज्ञानिक नहीं रहा है परंतु सामान्य अनुसंधान से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक महत्वपूर्ण रहा है जो वैज्ञानिक अनुसंधान के विकास में तर्कसंगत की भूमिका को निभाता है।

शिक्षा और समाजशास्त्र ऐसे विज्ञान है जिनके अंतर्गत प्रायोगिक पद्धति का उपयोग नहीं किया जाता है फिर भी कठोर वैज्ञानिक मापदंड के द्वारा एक विशेष प्रकार की विषय सामग्री को प्रयोग इस अध्ययन में उपयुक्त लिया जाता है जिससे इन अनुसंधान ओं को प्राय उपस्थिति में शामिल किया जा सकता है अतः विज्ञान ज्ञान अर्जन करने की एक महत्वपूर्ण साधन है जिसके आधार पर अनुसंधान में विधि को अधिक महत्व दिया जाता है और अनुसंधान के लिए केवल उसी समस्या का चयन किया जाता है जिसका की अध्ययन केवल वैज्ञानिक विधि द्वारा ही संभव हो। प्राय वैज्ञानिक विधि का प्रयोग विशेष रूप से प्रयोग विधि के रूप में विषय सामग्री के अध्ययन के रूप में और सामाजिक वैज्ञानिक और मानव विज्ञान के अध्ययन के रूप में किया जाता है इन सभी क्षेत्रों की समस्याओं को हल करने के लिए वैज्ञानिक विधि को ही उपयोग में लिया जाता है जब समस्या की प्रधानता अधिक होती है तो अध्ययन में किसी भी विधि की अपेक्षा समस्या पर अधिक बल दिया जाता है और उस स्थिति में

www.ignited.in

अनुसंधान का स्वरूप समस्या अनु स्थापित अनुसंधान के रूप में हो जाता है जिससे उस अनुसंधान के अंतर्गत समस्या के समाधान हेतु एक विशेष प्रक्रिया को अपनाया जाता है जिसके आधार पर उस समस्या का अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है जब अध्ययन की उस प्रक्रिया को वैज्ञानिकता के कठोर मापदंड पर देखा जाता है तो यह विधि तंत्र के अंतर्गत सब अन्वेषण पद्धतियों का समावेश करता है जिसकी सहायता से समस्या का अध्ययन किया जा सके संक्षेप में कहा जा सकता है कि किसी भी प्रकार की समस्या विधि तंत्र के द्वारा ही हल की जा सकती है जिस के विपरीत जब एक समस्या के अध्ययन में समस्या की अपेक्षा अध्ययन पद्धति को अधिक बल दिया जाता है तो विधि अनूप अनूप स्थापित अनुसंधान में जो प्रक्रिया अपनाई जाती है उसे प्रतीक उपागम के नाम से जाना जाता है प्रविधि का विशेष संबंध विश्लेषण के यंत्रों से हैं जिस सामग्री का विश्लेषण होना आवश्यक है वह सांख्यिकी तथा असंख्य की भी हो सकती है। अतः साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यवस्थित नियंत्रित और वस्तुनिष्ठ अध्ययन पद्धति है वैज्ञानिक कहलाती है।

उद्वेश्य

कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राओं के जीवन कोैशल का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तकनीकी शब्द

1. जीवन कौशल
2. व्यवसायिक कौशल

अध्ययन की विधि

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

भरतपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् समस्त छात्र छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श:- भरतपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के 600 छात्र -छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण:- जीवन कौशल मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधि:-

- मध्यमांन
- मानक परीक्षण
- टी- परीक्षण
- सह्-सम्बन्ध

शोध परिकल्पना

मुख्य परिकल्पना 1 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यवसायिक कौशल में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 2 उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के व्यावसायिक कौशल में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 3 उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों के व्यवसायिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 4 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के व्यवसायिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 5 उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक संवेदना से कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 6 उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक संवेदना से संबंधित कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 7 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक संवेदना से संबंधित कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 8 उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के प्रजातांत्रिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 9 उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों के प्रजातांत्रिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

www.ignited.in

मुख्य परिकल्पना 10 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के प्रजातांत्रिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 11 उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 12 उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 13 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के पारिवारिक कौशलों में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 14 उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के कानूनी साक्षरता कौशल में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 15 उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों के कानूनी साक्षरता कौशल में कोई अंतर नहीं है।

मुख्य परिकल्पना 16 उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के कानूनी साक्षरता कौशल में कोई अंतर नहीं है।

शोध परिकल्पना:-

मुख्य परिकल्पना 1 उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यवसायिक कौशल में कोई अंतर नहीं है।

समूह	विधार्थी समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
छात्र	300	125.87	8.155	0.153722	स्वीकृत 0.05 स्तर
छात्राओ	300	125.97	7.775		

स्वतंत्रता अंश = 598 0.05 स्तर पर टी.मान = 1.971

निर्वाचन एवं विश्लेषण %& उपयुक्त तालिका के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के व्यवसाई कौशल में छात्रों का मध्यमान 125.87 तथा छात्रों का मध्यमान 125. 97 देखा गया जिसके अंतर्गत छात्रों का मानक विचलन 8 .155 तथा छात्रों का मानक विचलन 7.775 देखा गया जिसके आधार पर टीम मान 0.153 प्राप्त हुआ। निम्न परिकल्पना को स्वीकृत किया गया यह देखा गया कि छात्र-छात्राओं के व्यवसाय कौशल में कोई अंतर नहीं है।

परिकल्पना के निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि छात्र-छात्राओं के जीवन पर उनके व्यवसाय कौशल का प्रभाव बहुत अधिक होता है एक किशोर उन्हीं व्यवसाय कौशल में जाना पसंद करता है जिसमें उनका परिवार होता है या फिर उनके मित्र जाना पसंद करते हैं । सामान्य तौर पर देखा जाता है कि जब छात्र और छात्रा एक ही वातावरण में शिक्षा प्राप्त करते हैं तो सोचने का नजरिया भी लगभग समान ही होता है । जिसके कारण उनके सोच मे कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखाई नहीं देता है। जिसके आधार पर इस परिकल्पना में कोई विशेष अंतर नहीं दिखा जिसके आधार पर परिकल्पना स्वीकृत की गई।

आरेख संख्या 1

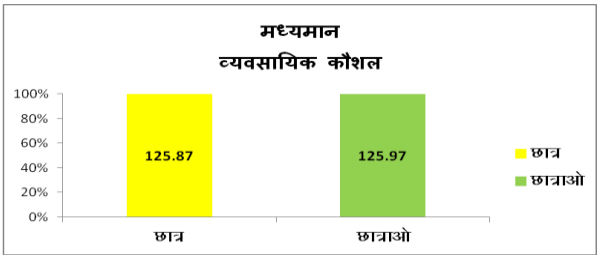

मुख्य परिकल्पना 2 उच्च माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के व्यावसायिक कौशल में कोई अंतर नहीं है।

समूह	विधार्थी समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	परिकल्पना सत्यापन स्तर
कला वर्ग	300	125.71	8.121	0.692	स्वीकृत 0.05 स्तर
विज्ञान वर्ग	300	125.25	8.166		

स्वतंत्रता अंश = 598 0.05 स्तर पर टी.मान = 1.971

निर्वाचन एवं विश्लेषण %& उपयुक्त तालिका के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग की छात्र-छात्राओं के व्यवसाई कौशल में कला वर्ग का मध्यमान 125.71 तथा विज्ञान वर्ग का मध्यमान 125.25 देखा गया जिसके अंतर्गत छात्रों का मानक विचलन 8.121 तथा छात्रों का मानक विचलन 8.166 देखा गया जिसके आधार पर टीम मान 0.692 प्राप्त हुआ। निम्न परिकल्पना को स्वीकृत किया गया यह देखा गया कि कला वर्ग एवम् विज्ञान वर्ग छात्र-छात्राओं के व्यवसाय कौशल में कोई अंतर नहीं है।

परिकल्पना के निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के छात्र-छात्राओं की मानसिकता में कोई विशेष अंतर नहीं देखा जाता क्योंकि दोनों का व्यवसायिक कौशल का चुनाव समान स्तर पर होता है। क्योंकि किशोरों में नेतृत्व की क्षमता समान रूप से समावेशित है वह अपने बारे में सही गलत का अनुभव कर सकते हैं और एक रूचि के अनुसार

www.ignited.in

सही दिशा का भी चुनाव कर सकते हैं जिसके आधार पर उनको अपने लिए व्यवसाय को चुनने में कोई परेशानी नहीं होती है।

आरेख संख्या 2

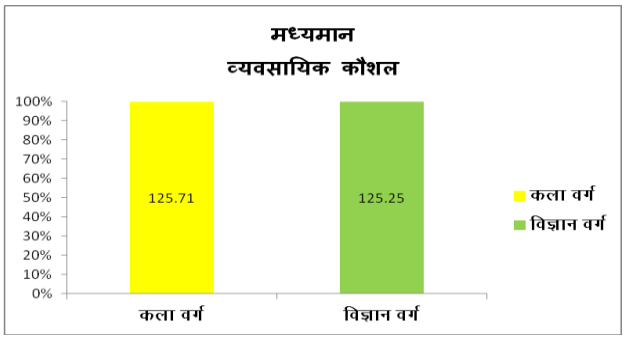

निष्कर्ष:- प्राचीन काल से ही भारत भारत के लोगों के द्वारा ज्ञान का संग्रहण किया जाता रहा है पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत के रूप में लोगों को वही संस्कार दिए जाते हैं जो उनके परंपरागत होते हैं तथा वह कुछ स्वयं के द्वारा अर्जित भी करते हैं । संस्कारों की इसी श्रंखला को शिक्षा के नाम से जाना जाता है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी मानसिक आध्यात्मिक सामाजिक राजनीतिक प्रगति करता है शिक्षा ने मानव को सभी प्रकार के जीवो में श्रेष्ठ बनाया है और संपूर्ण बनाया है शिक्षा के अभाव में मानव एक पशु तुल्य माना जाता है अतः शिक्षा ज्ञान और विज्ञान दोनों का अभाव होगा तो मनुष्य एक जानवर के समान प्रतीत होगा। आदि काल में समाजों में अनौपचारिक रूप से शिक्षा प्रदान की जाती थी जैसे परिवार के द्वारा क्रीडा समूह के द्वारा व्यवसाय और जातिगत समूह के द्वारा इत्यादि परंतु वर्तमान युग में शिक्षा शिक्षण संस्थाओं के द्वारा जैसे विश्वविद्यालय स्कूल कॉलेज आदि के द्वारा औपचारिक रूप से शिक्षा प्रदान की जाती है।

संदर्भ सूचीं

अस्थाना विपिन (2012), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एंव मूल्यांकन अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

अस्थाना विपिन (2012), 'शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी ' अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

भटनागर, ए.बी. 2014 'मापन में साख्यिकी' एम. लाल बुक डिपों, मेरठ।

वल्ड हेल्थ आर्गेनाजेशन 1999 प्रोग्राम आन मंटल हेल्थ: लाइफ स्किल्स एजूकेशन इन स्कूल।

नेहा शर्मा*

शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

Corresponding Author